सतगुर क्यों पाइए कुली में, भेखें बिगारयो वैराग।
डिंभकाइए दुनियां ले डबोई, बाहेर सीतल मांहें आग।। ३ ।।

इस कलियुग में सतगुरु का मिलना बड़ा कठिन है, क्योंकि यहां सब साधु सतगुरु का भेष धारण कर वैरागी बने फिरते हैं। इस पाखंड ने दुनियां का नाश पीट दिया है। यह लोग बाहर से दिखने में सन्त नजर आते हैं, किन्तु उनके अन्दर माया की आग लगी होती है।

गोविन्द के गुन गाए के, तापर मांगत दान।
धिक धिक पड़ो ते मानवी, जो बेचत हैं भगवान।। ४ ।।

वह गोविन्द के गुणों को गाकर माया बटोरते हैं। ऐसे मनुष्यों को धिक्कार है जो भगवान को बेचते फिरते हैं।

उदर कारन बेचें हरी, मूढ़ों एही पायो रोजगार।
मारते मुख ऊपर, वाको ले जासी जम द्वार।। ५ ।।

यह अपने पेट के लिए भगवान को बेचते हैं। उन मूर्खों ने यही एक सस्ता रोजगार पाया है। इनको अन्त समय में यम के दूत मुख पर डंडे मार-मारकर यमराज के पास ले जाएंगे।

बैठत सतगुर होए के, आस करें सिष्य केरी।
सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी।। ६ ।।

सत का ज्ञान देने के लिए सतगुरु बनकर बैठते हैं, परन्तु शिष्यों से माया की आशा लगी रहती है। ऐसे गुरु अपने शिष्यों सहित नरक में जाते हैं (लोभी गुरु लालची चेला, दोनों नरक में ठेलम ठेला)।

जो मांहें निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रह्म सों पेहेचान।
महामत कहे संगत कर वाकी, कर वाही सों गोष्ट ग्यान।। ७ ।।

जो अन्दर से निर्मल हो और बाहर से दिखावा न करे, वह पारब्रह्म को पहचानता है। श्री महामतिजी कहते हैं ऐसे ही साधु की संगति करना ठीक है और उसी से ही गुझ (गुह्य) ज्ञान की गोष्ठी (चर्चा) करनी चाहिए।

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ २८८ ॥

राग श्री जेतसी

किरंतन वेदान्त के

कहो कहोजी ठौर नेहेचल, वतन कहां ब्रह्म को।टेक।।
तुम तीन सरीर तज भए ब्रह्म, पायो है पूरन ग्यान।
जो लों संसे ना मिटे, साधो तो लों होत हैरान।। १ ।।

वेदान्तियों से श्री महामतिजी पूछते हैं कि उस पारब्रह्म सच्चिदानन्द का वतन (घर) जो अखण्ड है, कहां है, बताओ। तुम स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर को छोड़कर अपने को ब्रह्म तथा पूर्ण ज्ञानी कहते हो। जब तक तुम्हारे मन के संशय नहीं मिट जाते तब तक तुम्हारा चित्त बेचैन रहता है।

वेदांती संतो महंतो, तुम पायो अनुभव सार।
निज वतन जो आपनों, तुम सोई करो निरधार।। २ ।।

हे वेदांती सन्तो, महंतो! तुमने अपने अनुभव से कुल ज्ञान का सार प्राप्त किया है। अब तुम अपने अखण्ड घर को निश्चित करके बताओ।

Nijanand App

पेहेले पेड़ देखो माया को, जाको न पाइए पार।
जगत जनेता जोगनी, सो कहावत बाल कुमार।। ३ ।।

पहले माया रूपी पेड़ को देखो जिसका पार यहां किसी ने नहीं पाया। जिसने सारे संसार को पैदा किया है फिर भी वह योगिनी और कुंवारी कन्या कहलाती है।

मात पिता बिन जनमी, आपे बंझा पिंड।
पुरुख अंग छूयो नहीं, और जायो सब ब्रह्मांड।। ४ ।।

यह माया बिना माता पिता के जन्मी है और स्वयं बांझ कहलाती है। इसका कोई पति नहीं है, फिर भी सारे संसार को पैदा कर दिया है।

आद अंत याको नहीं, नहीं रूप रंग रेख।
अंग न इन्द्री तेज न जोत, ऐसी आप अलेख।। ५ ।।

इसका न आदि है, न अन्त है और न रंग है, न रूप है। न इसका अंग है, न इन्द्रियां हैं, न इसके अन्दर तेज है और न ज्योति है। इस तरह यह किसी को दिखाई नहीं देती।

जल जिमी न तेज वाए, न सोहं सब्द आकास।
तब ए आद अनाद की, जब नहीं चेतन प्रकास।। ६ ।।

यह जल, जमीन, तेज, वायु और आकाश पांच तत्व भी नहीं थे। ओइम् सोऽहं, ज्योति स्वरूप भी नहीं थे। जब चेतन नहीं था और प्रकाश भी नहीं था, तब भी यह थी, अतः अनादि कहलाती है।

पढ़ पढ़ थाके पंडित, करी न निरने किन।
त्रिगुन त्रिलोकी होए के, खेले तीनों काल मगन।। ७ ।।

बहुत पण्डित पढ़-पढ़ कर थक गए, परन्तु किसी ने इसका निर्णय नहीं किया। यह ब्रह्मा, विष्णु, महेश होकर भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों काल में खेलती है।

विष्णु ब्रह्मा रुद्र जनमें, हुई तीनों की नार।
निरलेप काहू न लेपहीं, नारी है पर नाहीं आकार।। ८ ।।

इसने ब्रह्मा, विष्णु और शंकरजी को जन्म दिया और तीनों की ही पत्नी (सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती) भी बनी। यह सबसे अलग है और सबके अन्दर भी है, पर इसका शरीर नहीं है।

गगन पाताल मेर सिखरों, अष्टकुली बनाए।
पचास कोट जोजन जिमी, सागर सात समाए।। ९ ।।

आसमान, पाताल, पहाड़ों की चोटियां और अष्टावरण इसने बनाए हैं जिसमें पचास करोड़ योजन जमीन है और इसमें सात समुद्र समाए हैं।

तेज तिमर यामें फिरें, रवि ससि तारे ना थिर।
सेस नाग कर ब्रह्मांड, ले धर्‌यो वाके सिर।। १० ।।

अंधेरे और उजाले का चक्कर इसमें चलता है। सूर्य, चांद और तारे भी सब इसी में घूमते हैं और इसी ने शेषनाग के सिर पर पूरे ब्रह्माण्ड को लाद रखा है।

Nijanand App

देव दानव रिखि मुनि, ब्रह्म ग्यानी बड़ी मत।
सास्त्र बानी सबद मात्र, ए बोली सबे सरस्वत।। ११ ।।

देवता, दानव, ऋषि, मुनि, सांसारिक बड़ी मत के ब्रह्म ज्ञानी, शास्त्रों की वाणी और शब्द सबकी रचना इसी ने की है।

बरन चारों विद्या चौदे, ए पढ़ाए भली पर।
कर आवरण मोह नींद को, खेलावे नारी नर।।१२ ।।

चारों वर्णों के चौदह विद्याओं के पढ़ने वालों को इस माया ने ही पढ़ाया है। स्त्री तथा पुरुषों के ऊपर मोह का आवरण डालकर अज्ञान में भटकाती है।

लाख चौरासी जीव जंत, ए बांधे सबे निरवान।
थिर चर आद अनाद लों, ए भरी सो चारों खान।। १३ ।।

चौरासी लाख योनियों के जीव जन्तुओं को इसने काल के बन्धन में बांध रखा है। इसने स्थिर और चर जीवों को शुरू से चार किस्म की (अण्ड़े से, शरीर से, पसीने से और पृथ्वी से) पैदा करने के चक्कर में बांधा है।

पांच तत्व चौदे लोक, पाउ पल में उपजाए।
खेल ऐसे अनेक रचे, नार निरंजन राए।। १४ ।।

यह पांच तत्वों और चौदह लोकों को एक क्षण के चौथाई भाग में पैदा करती है। ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड पैदा करती है और निराकार की पत्नी कहलाती है।

ए काली किन पाई नहीं, सब छाया में रहे उरझाए।
उपजे मोह अहंकार थें, सो मोहै में भरमाए।। १५ ।।

यह माया काली रात की तरह है जो दिखाई नहीं देती। सारा संसार इसकी छाया में ही उलझा है। जो मोह तत्व और अहंकार से पैदा हैं वह इसी में ही भटकते फिरते हैं।

बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जेती गम वचन।
उतपन सब होसी फना, जो लों पोहोंचे मन।। १६ ।।

बुद्धि, चित्त, नजर, कान, वचन और मन की जहां तक पहुंच है, सब पैदा होकर मिट जाते हैं।

ऊपर तले माहें बाहेर, दसो दिसा सब एह।
सो सब्द काहूं न पाइए, कह्या ठौर अखण्ड घर जेह।। १७ ।।

यह ऊपर, नीचे, अन्दर और बाहर दसों दिशाओं में है, पर जो अखण्ड घर परमधाम है उसको बताने वाले शब्द कहीं नहीं मिलते।

तो कह्यो न जाए मन वचन, ना कछू पोहोंचे चित।
बुधें सुनी न निसानी श्रवनों, तो क्यों कर जाइए तित।। १८ ।।

जिसे मन से, वचन से, किसी ने न कहा हो तथा किसी का चित्त भी जहां न पहुंचा हो, बुद्धि से इसके लिए कुछ जाना न हो और न कानों से सुना ही हो, तो वहां कैसे जाया जा सकता है?

वेदांती माया को यों कहें, काल तीनों जरा भी नाहें।
चेतन व्यापी जो देखिए, सो भी उड़ावें तिन माहें।। १९ ।।

वेदान्ती माया को भूत, वर्तमान, भविष्य काल में नहीं बताते हैं। इस प्रकार चेतन तत्व जो सबमें व्यापक है उसको भी इसके साथ समाप्त कर देते हैं।

Nijanand App

ना कछु ना कछु ए कहें, ओ सत-चिद-आनंद।
असत सत को ना मिले, ए क्यों कर होए सनमंध।। २० ।।

वेदान्ती जिसे 'नेति-नेति' कहते हैं, वह पारब्रह्म तो सत्य है, चेतन है और आनन्द की लीला करता है (वह सच्चिदानन्द है)। झूठ और सत कभी नहीं मिलते तो इनका सम्बन्ध कैसे जाना जाए।

ए जो व्यापक आतमा, परआतम के संग।
क्यों ब्रह्म नेहेचल पाइए, इत बीच नार को फंद।। २१ ।।

यह जिसको आत्मा कहकर सबमें व्यापक बताते हैं उसे उसकी परआतम कहा है। अखण्ड पारब्रह्म को इस माया के जाल में कैसे पाया जाए?

निबेरा खीर नीर का, महामत करे कौन और।
माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुर बतावें ठौर।। २२ ।।

महामतिजी कहते हैं कि ब्रह्म और माया की पहचान कराकर अखण्ड घर की पहचान सतगुरु ही करा सकते हैं।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ३१० ।।

राग श्री आसावरी

मैं पूछों पांड़े तुम को, तुम कहो करके विचार।
सास्त्र अर्थ सब लेवहीं, पर किने न कियो निरधार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे पण्डितजी! मैं तुमसे जो पूछता हूं उसका उत्तर तुम विचार करके दो। तुम सब शास्त्रों के अर्थ को समझते हो पर किसी ने अभी तक पारब्रह्म की पहचान नहीं की।

माया मोह अहंकार थें, ए सबे उतपन।
अहंकार मोह माया उड़ी, तब कहां है ब्रह्म वतन।। २ ।।

माया, मोह, अहंकार से सारी सृष्टि की उत्पत्ति बताते हो और जब यह तीनों प्रलय में समाप्त हो जाएंगे तब पारब्रह्म का घर कहां होगा, बताइए?

कोई कहे ब्रह्म आतमा, कोई कहे पर आतम।
कोई कहे सोहं सब्द ब्रह्म, या बिध सब को अगम।। ३ ।।

आपमें से कोई कहता है कि आत्मा ब्रह्म है, कोई परआतम को ब्रह्म बताता है। कोई ओइम, सोऽहं, ज्योति स्वरूप को ब्रह्म बताता है। इस तरह से उस पारब्रह्म की पहचान किसी को नहीं हुई।

कोई कहे ए सबे ब्रह्म, रहत सबन में व्याप।
कोई कहे ए सबे छाया, नांहीं यामें आप।। ४ ।।

कोई कहता है ब्रह्म सब में व्यापक है। कोई कहता है कि यह सब माया है। इसमें पारब्रह्म नहीं है।

कोई कहे ओ निरगुन न्यारा, रहत सबन से असंग।
कोई कहे ब्रह्म जीव ना दोए, ए सब एकै अंग।। ५ ।।

कोई कहते हैं कि वह निर्गुण है और सबसे अलग रहता है। कोई कहता है कि ब्रह्म और जीव दो नहीं एक ही हैं।

Nijanand App